मोहरा यूं ही नहीं मुहर बनता...

विदेशी दौरों और क्षमादान के लिए सफाई देनी पड़ी।

इस सर्वोच्च संवैधानिक पद का वर्तमान चुनाव ब्लैकमेलिंग व दगाबाजी के लिए जाना जायेगा। चुनाव कोई जीते लेकिन जिस तरह से प्रत्याशीयों के चयन व क्षेत्रीय दलों ने समर्थन का प्रदर्शन हो रहा है वह इस पद की गरिमा को कम करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है। इस चुनाव में गठबंधन धर्म गंड़बधन धर्म में बदल गया है। क्षेत्रीय से लेकर राष्ट्रीय सभी दल इस कदर नंगे हो गये हैं कि अब आगे आने वाले समय में उनको किसी भी तरह ढकना असम्भव हो जायेगा।

यद्यपि कि आजकल कार्टूनिष्टों पर एक तरह की नयी आफत हुई है कि कब कौन कहां उनको पिटवा देगा। फिर भी एक कार्टूनिष्ट ने एक पत्रिका के लिए एक कार्टून बनाया जिसमें बताया गया है, वृद्धों के लिए दुर्लभ अवसर। पदः भारत का राष्ट्रपति, उम्रः 35 (80 से ऊपर वाले को वरीयता) कार्यः गणतंत्र दिवस पर सांत्वना भरे शब्द बोलना, हत्यारों की दया याचिकाओं को रखना, अलग—अलग देशों में परिवार के साथ घूमना, तन्ख्वाहः ढाई लाख प्रतिमाह।

सबसे अहम प्रश्न है कि संवैधानिक पदों पर दलीय निष्ठा वालों का चयन क्यों? दल या गठबंधन क्यों अपना आदमी इस पद पर बिठाना चाहते हैं? इस चुनाव को अराजनीतिक करार देने का झूठा स्वांग क्यों रचाया जाता है जब कि यह न पूर्णतया राजनीतिक है बल्कि राजनीतिक दल सत्ता प्राप्ति के लिए पंचायत से प्रधानमंत्री तक राजनीतिक मैदान में खेलते हैं।

उत्तर की इबारत बहुत साफ है दल या गठबंधन इस पर बैठे व्यक्ति को कठपुतली की तरह नचाने के लिए ऐसा करते हैं। अब राष्ट्रपति के चुनाव के लिए दंगल शुरू हो चुका जिसमें बाकी पहलवानो के क्वालीफाइंग राउण्ड में ही बाहर हो जाने के कारण जो दो पहलवान बचे हैं उनमें से कोई जीते इतना तो तय है कि वे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, सर्व पल्ली राधाकृष्णन,ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के चरण की धूल भी नहीं होंगे।

राष्ट्रपति का चुनाव सीधे जनता से होना चाहिए?

जब ग्राम प्रधान, जिला पंचायत अध्यक्ष, नगर पंचायत अध्यक्ष, महापौर का चुनाव सीधे जनता के द्वारा हो सकता है तो व्यवस्था ने बिना कोई बड़ा परिवर्तन किये राष्ट्रपति का चुनाव भी सीधे जनता द्वारा किया जाना चाहिए। क्यों कि जब राष्ट्रपति सीधे जनता द्वारा चुना जायेगा तो राज्यों को पैकेज की, नेताओं के मुकदमों की Permission की, उनके भ्रष्टाचार में दंडित होने से बचाये जाने की ब्लैकमेलिंग से बचा जा सकेगा।

राष्ट्रपति चुनाव में सी.बी.आई. की भूमिका-

देश के भ्रष्टाचारियों को जेल भेजने में सी.बी.आई. की भूमिका भले ही नगण्य साबित हुई है, लेकिन राष्ट्रपति चुनाव में वह सबसे बड़ी भूमिका निभाती है।

2007 के चुनाव की यदि याद न हो तो हम याद दिलाना चाहेंगे कि अपना उम्मीदवार जिताने के लिए किस तरह राज्यपाल को अभियोजन की स्वीकृति देने से मना किया गया था और इस चुनाव में किस तरह काले कारनामों की सूची दिखाकर समर्थन लिया गया।❑

364 कमरों वाले महल में अब तक रहने वालों की एक झलक

○डॉ. एस.के. शर्मा, एडवोकेट

डॉ. राजेंद्र प्रसाद-1952—1957—1962

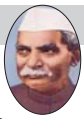

13 मई को पदासीन हुए। पहले राष्ट्रपति को पांच लाख सात हजार चार सौ वोट मिले जबकि केटी शाह को 92 हजार 827 वोट मिले।
13 मई को दूसरी बार राष्ट्रपति बने। इन्हें 4,59,698 वोट मिले। नागेंद्र नारायण दास एवं चौधरी हरी राम को क्रमशः 2000 एवं 2672 वोट मिले। डॉ. राजेंद्र प्रसाद लगातार दो चुनाव जीतकर दो कार्यकाल पूरा करने वाले पहले राष्ट्रपति बने। तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से हिंदू कोड बिल पर मतभेद हुआ था।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन-1962—1967

13 मई को पदभार ग्रहण किया। इनको 5,53,067 वोट कले। चौधरी हरी राम और यमुना प्रसाद त्रिशुलिया को क्रमशः 6341 और 3537 मत मिले। चीन के हमले के बाद डॉ. राधाकृष्णन ने प्रधानमंत्री नेहरू से रक्षा मंत्री वीके कृष्णा मेनन को हटाने के मामले में सलाह मांगी।

डॉ. जाकिर हुसैन- 1967—1969

1967: डॉ. जाकिर हुसैनः 13 मई को पदभार ग्रहण किया। 17 उम्मीदवारों में से डॉ. जाकिर हुसैन को सर्वाधिक 4,71,244 मत मिले। के. सुब्बाराव को हराकर पहले अल्पसंख्यक राष्ट्रपति बने। 3 मई 1969 को इनके आकस्मिक निधन के बाद संविधान के अनुच्छेद 65 (1) के तहत उप राष्ट्रपति वीवी गिरि को कार्यकारी राष्ट्रपति बनाया गया। इन्होंने 20 जुलाई 1969 को पद से इस्तीफा दिया।

वीवी गिरि- 1969—1974

24 अगस्त को राष्ट्रपति बने। 15 प्रत्याशियों में से गिरि को सर्वाधिक 4,01,515 वोट जबकि डॉ. नीलम संजीव रेड्डी को 3,13,548 मत मिले। 1969 में जाकिर हुसैन की मौत के बाद 3 मई से 20 जुलाई तक तत्कालीन उप राष्ट्रपति वीवी गिरि को कार्यवाहक राष्ट्रपति बनाया गया। 1969 में वी.वी. गिरि दूसरी वरीयता के वोटों की गिनती से जीते। राष्ट्रपति चुनाव में भ्रष्टाचार का सूत्रपात्र यहीं से हुआ सत्ता का बेजा इस्तेमाल हुआ। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपने ही अधिकृत प्रत्याशी को हरवा दिया। 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के मामले पर इंदिरा गांधी से मतभेद जगजाहिर है।

फखरुद्दीन अली अहमद- 1974—1977

24 अगस्त को पदभार ग्रहण किया। उन्हें 7,65,587 वोट जबकि त्रिदीब चौधरी को 1,89,196 मत मिले। 1974 में केवल दो उममीदवारों फखरुद्दीन अली अहमद और त्रिदीव चौधरी के बीच सीधा मुकाबला हुआ। इमरजेंसी लगने के लिए अपनी स्वीकृति देने के लिए जाने जाते हैं।

नीलम संजीव रेड्डी- 1977—1982

11 फरवरी को फखरुद्दीन की असामयिक मौत के बाद तत्कालीन उपराष्ट्रपति बीडी जट्टी को कार्यकारी राष्ट्रपति बनाया गया। राष्ट्रपति की मौत या इस्तीफे के बाद छह महीने के अंदर राष्ट्रपति चुनाव कराया जाता है। 37 उम्मीदवारों ने पर्चे दाखिल किए। जांच में रिटर्निंग अधिकारी ने रेड्डी के अलावा सभी 36 लोगों के पर्चे रद्द कर दिए। इस तरह रेड्डी निर्विरोध चुने गए। कोई ऐसा कार्य नहीं जिसके लिए याद किये जायं सिवाय इसके कि अपनी हार का बदला जगजीवन राम को प्रधानमंत्री न नियुक्त करके लिया।

ज्ञानी जैल सिंह- 1982—1987

25 जुलाई को राष्ट्रपति बने। जैल सिंह को 7,54,113 और एचआर खन्ना को 2,82,685 मत मिले। अंतिम समय में राजीव गांधी के साथ गंभीर मतभेद। सरकार के डाक बिल को वापस लौटा दिया था।

आर वेंकटरमन- 1987—1992

25 जुलाई को राष्ट्रपति बने। इन्हें 7,40,148 मत मिले। चार प्रधानमंत्रियों राजीव गांधी, वी.पी. सिंह, चन्द्रशेखर व नरसिंहा राव के साथ काम किया निर्विवाद कार्यकाल।

शंकर दयाल शमा- 1992—1997

25 जुलाई को राष्ट्रपति बने। चार प्रत्याशियों में डॉ. शर्मा को 6,75,864 मत मिले।

के.आर. नारायणन- 1997—2002

25 जुलाई को पदभार ग्रहण किया। दोनों उम्मीदवारों में से नारायणन और टीएन शेषन को क्रमशः 9,56,290 और 50,631 मत मिले।

डॉ. एजीजे अब्दुल कलाम- 2002—2007

25 जुलाई को डॉ. कलाम राष्ट्रपति बने। कुल दो प्रत्याशियों में कलाम को 9,22,884 वोट मिले। लेफ्ट समर्थित उम्मीदवार कैप्टन लक्ष्मी सहगल को 1,07,366 मत मिले। गैर राजनीतिक व्यक्ति। 2005 में बिहार विधान सभा भंग कर राष्ट्रपति शासन लगाने का विवादास्पद निर्णय। आफिस ऑफ प्रॉफिट बिल एक बार सरकार को वापस लौटा दिया था।

प्रतिभादेवी सिंह पाटिल- 2007 से 2012

25 जुलाई को देश की पहली महिला राष्ट्रपति बनीं। संप्रग समर्थित प्रतिभा पटिल को 6,38,116 और राजग समर्थित निर्दलीय उम्मीदवार भैरोंसिंह शेखावत को 3,31,306 मत मिले। पहली राष्ट्रपति जिनको अपने विदेशी दौरों और क्षमादान याचिकाओं के लिए सफाई देनी पड़ी।

प्रणव मुखर्जी- 2012 से अबतक

संप्रग समर्थित प्रणव मुखर्जी को 69.3% और राजग समर्थित पी.ए. संगमा को 30.7% मत मिले। राष्ट्रपति बनने से पूर्व भारत सरकार में वित्त मंत्री, विदेश मंत्री, रक्षा मंत्री और योजना आयोग के उपाध्यक्ष रह चुके हैं।